संपादकीय

10.5005/jras-3-1-v

आयुर्वेद सिद्धान्तों की पुनर्प्रस्थापना – गंतव्य पथ

वैज्ञानिक जगत में मौलिक (Pure) बनाम ट्रान्स्लेशनल (Translational or applied) अनुसंधान में किसको अधिक प्राथमिकता दी जाए, इस विषय पर निरंतर चर्चा चलती रही है। आयुर्वेद जैसी पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली में यह चर्चा की अधिक प्रासंगिक है। आयुर्वेद का ज्ञान और अभ्यास समय की कसौटी पर खरा उतरा है। आयुर्वेद के ठोस मूलभूत सिद्धान्त और ज्ञानमीमांसीय आधारशिलाएँ वैदिक विचार प्रक्रिया में मजबूती से जड़ जमाए हुए हैं इसीलिए आयुर्वेद इस 21वीं सदी में भी हमारे देश के स्वास्थ्य संबंधी परिदृश्य में भलीभाँति उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करता आ रहा है।

आधुनिक युग में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रगति ने आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण की मांग को बढ़ाया है। वैज्ञानिक प्रक्रिया वास्तविक साक्ष्य एवं पुनरावर्तनयोग्य परिणामों की मांग करती है और अधिक वस्तुपरक दृष्टिकोण अपनाता है जबकि आयुर्वेद जैसी प्राचीन वैदिक पद्धतियाँ व्यक्तिपरक एवं व्यक्तिगत दृष्टिकोण को अपनाती हैं। अतः आयुर्वेद के आधुनिक वैज्ञानिकों के लिए आयुर्वेद के मौलिक सिद्धान्तों को समकालीन विज्ञान जैसे भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जैवभौतिक विज्ञान, जैवरसायन विज्ञान, आदि के अनुरुप पुनर्सिद्ध करना अनिवार्य हो गया है।

आधुनिक युग में आयुर्वेद जैसे प्राचीन विज्ञान को पुनर्प्रस्थापित एवं पुनर्वैधीकृत करने के लिए दृढ़ वैज्ञानिक परीक्षण द्वारा आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धांतों का गहन मौलिक अनुसंधान करना वर्तमान समय की आवश्यकता है। केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने प्रचलित वैज्ञानिक तरीकों का अनुसरण करते हुए आयुर्वेद के वैज्ञानिक तथ्यों को उजागर करने के लिए आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान प्रौद्योगिकी के निर्माण के मिशन के साथ इस दिशा में कुछ बड़े प्रयास किए हैं। इस संबंध में प्रकृति मूल्यांकन के लिए स्केल एवं वेब पोर्टल का निर्माण तथा आयुर्वेद के नैदानिक सिद्धांतों के सत्यापन पर चल रहे कार्य कुछ नवीनतम पहल है।

आयुर्वेद में वर्णित मूलभूत सिद्धांत जैसे सामान्यविशेषसिद्धान्त, पंचमहाभूतसिद्धान्त, त्रिदोषसिद्धान्त, दैनिक एवं ऋत्विक चक्र आदि की स्थापना आयुर्वेद की वैश्विक स्वीकृति को संवर्धित करेगी।

इसके लिए आयुर्वेद के विभिन्न हितधारकों के सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। आयुर्वेद में अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी संस्था केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद् इस क्षेत्र में नेतृत्व करने के लिए उत्सुक है तथा इस विषय में आयुर्वेद के विशेषज्ञों, उत्सुक व्यक्तियों तथा विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्र के विशेषज्ञों के विचारों और सुझावों का स्वागत करती है एवं उनके विचारों को आगे ले जाने के लिए परिषद् क्षेत्र में उपलब्ध सर्वोत्तम विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में सहयोग एवं साथ कार्य करने के लिए उत्सुक है। मुझे विश्वास है कि यह प्रयास चिकित्सा जगत् में आयुर्वेद विज्ञान के दृढ़ कदम बढ़ाने में सहायक होंगे और इसके परिणाम आधुनिक विज्ञान के वैज्ञानिकों को भी अभिगम्य होंगे।

प्रो. वैद्य करतार सिंह धीमान
मुख्य सम्पादक
आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान पत्रिका
महानिदेशक
केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुष मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

10.5005/jras-3-1-vi

Re-establishing Ayurveda Principles — The Way Forward

The debate between emphasis on pure vs applied or translational research is an incessant one in the scientific world. The relevance of this debate is more in case of traditional systems of medicine such as Ayurveda. The knowledge and practice of Ayurveda has withstood the test of time and Ayurveda continues to provide services in healthcare scenario of our country even in this 21st century owing to its strong fundamental principles and epistemological foundations rooted in the Vedic thought process.

The advancements in science and technology in the modern world has increased the demand for modern scientific approaches. The scientific process demands tangible evidence and repeatable observations and takes a more objective approach unlike subjective and personalized approaches of ancient Vedic systems like Ayurveda. Thus it has become imperative for the modern day scientists of Ayurveda to reprove the fundamental principles of Ayurveda in the light of contemporary sciences such as physics, chemistry, bio-physics, bio-chemistry etc.

In-depth fundamental research involving putting the fundamental principles to rigorous scientific testing is the need of the hour to revalidate and re-establish ancient sciences like Ayurveda in the modern world. The CCRAS, with the mission of generating modern scientific knowledge technology to explore Ayurveda scientific treasure following prevalent scientific methods has made big strides in this direction. The latest initiatives in this regard include the development of a validated tool for Prakriti assessment and ongoing works on validation of diagnostic principles of Ayurveda.

The establishment of fundamental principles of Ayurveda such as Samanyavisheshasiddhanta, Panchamahabhutasiddhanta, Tridoshasiddhanta, circadian rhythms described in Ayurveda etc. will greatly enhance the global acceptance of Ayurveda.

This requires the collective effort of various stakeholders of Ayurveda and the CCRAS, as the premier organization for Research in Ayurveda is willing to take leads and welcomes ideas and suggestions from experts or enthusiasts from not just from experts of Ayurveda, but also from the diverse scientific fields to take forward their ideas. The Council is willing to support and work together to take forward their ideas under the mentorship of best experts available in the field. I am sure that these efforts will help to create a strong footing of the science of Ayurveda in Medical World as the outcomes will be understandable to the contemporary sciences.

Prof. Vaidya. K.S. Dhiman
Editor in Chief
Journal of Research in Ayurvedic Sciences

Director General
Central Council for Research in Ayurvedic Sciences
Ministry of AYUSH, Government of India, New Delhi